CAMBRIDGE
International Education

Cambridge O Level

LITERATURE IN HINDI **2026/01**

Paper 1 **October/November 2025**

MARK SCHEME

Maximum Mark: 100

Published

This mark scheme is published as an aid to teachers and candidates, to indicate the requirements of the examination. It shows the basis on which Examiners were instructed to award marks. It does not indicate the details of the discussions that took place at an Examiners' meeting before marking began, which would have considered the acceptability of alternative answers.

Mark schemes should be read in conjunction with the question paper and the Principal Examiner Report for Teachers.

Cambridge International will not enter into discussions about these mark schemes.

Cambridge International is publishing the mark schemes for the October/November 2025 series for most Cambridge IGCSE, Cambridge International A and AS Level components, and some Cambridge O Level components.

© Cambridge University Press & Assessment 2025

Generic Marking Principles

These general marking principles must be applied by all examiners when marking candidate answers. They should be applied alongside the specific content of the mark scheme or generic level descriptions for a question. Each question paper and mark scheme will also comply with these marking principles.

GENERIC MARKING PRINCIPLE 1: Marks must be awarded in line with: • the specific content of the mark scheme or the generic level descriptors for the question • the specific skills defined in the mark scheme or in the generic level descriptors for the question • the standard of response required by a candidate as exemplified by the standardisation scripts.
GENERIC MARKING PRINCIPLE 2: Marks awarded are always **whole marks** (not half marks, or other fractions).
GENERIC MARKING PRINCIPLE 3: Marks must be awarded **positively**: • marks are awarded for correct/valid answers, as defined in the mark scheme. However, credit is given for valid answers which go beyond the scope of the syllabus and mark scheme, referring to your Team Leader as appropriate • marks are awarded when candidates clearly demonstrate what they know and can do • marks are not deducted for errors • marks are not deducted for omissions • answers should only be judged on the quality of spelling, punctuation and grammar when these features are specifically assessed by the question as indicated by the mark scheme. The meaning, however, should be unambiguous.
GENERIC MARKING PRINCIPLE 4: Rules must be applied consistently, e.g. in situations where candidates have not followed instructions or in the application of generic level descriptors.
GENERIC MARKING PRINCIPLE 5: Marks should be awarded using the full range of marks defined in the mark scheme for the question (however; the use of the full mark range may be limited according to the quality of the candidate responses seen).
GENERIC MARKING PRINCIPLE 6: Marks awarded are based solely on the requirements as defined in the mark scheme. Marks should not be awarded with grade thresholds or grade descriptors in mind.

© Cambridge University Press & Assessment 2025

Annotations guidance for centres

Examiners use a system of annotations as a shorthand for communicating their marking decisions to one another. Examiners are trained during the standardisation process on how and when to use annotations. The purpose of annotations is to inform the standardisation and monitoring processes and guide the supervising examiners when they are checking the work of examiners within their team. The meaning of annotations and how they are used is specific to each component and is understood by all examiners who mark the component.

We publish annotations in our mark schemes to help centres understand the annotations they may see on copies of scripts. Note that there may not be a direct correlation between the number of annotations on a script and the mark awarded. Similarly, the use of an annotation may not be an indication of the quality of the response.

The annotations listed below were available to examiners marking this component in this series.

Annotations

Annotation	Meaning
✓	Correct
✗	Incorrect
?	Meaning unclear or illegible
SEEN	Used to show that blank pages have been seen and any creditworthy material has been awarded
IR	Irrelevant
Highlighter	Highlight

Question	Answer	Marks
1	Candidates respond to two of the four sections. Award marks up to a total of 10 for each section using the Band Descriptors in the section below. <u>Medieval Poetry (a)</u> (i) सत्य के मार्ग पर चलने के समान कोई तपस्या नहीं है और झूठ बोलने से बड़ा कोई पाप नहीं है। अथवा सच या सच्चाई के समान और कोई तपस्या नहीं और झूठ के समान और कोई पाप नहीं है। सच बोलना सब से बड़ी तपस्या है और झूठ बोलना सब से बड़ा पाप है। (ii) कबीरदास ने अपने ईश्वर के ज्ञान प्रकाश का उल्लेख किया है, वह कहते हैं कि यह भक्ति, यह सारा संसार, यह सारा ज्ञान उसके ईश्वर का ही है। वह कहते हैं मैं भगवान की पूजा करता हूँ और जहाँ भी देखता हूँ भगवान ही दिखते हैं। उस ज्ञान को और उस आत्मा को देखने पर मुझे लाल ही लाल दिखाई देता है। मेरे प्रभु का निवास मुझ में स्वयं देखा जा सकता है। अथवा मैं ईश्वर की भक्ति में इतना लीन हो गया कि उसी के रंग में रंग गया, भक्ति के रंग में रंग गया हूँ। (iii) कबीरदास जी व्यक्ति को सलाह देते है कि इस हाथ की माला को फेरने की बजाय मन के मोतियों को बदलो या घुमाओ और अपने अंतरमन के भावो को समझो। <u>Medieval Poetry (b)</u> (i) जिस व्यक्ति के सिर पर मोर का मुकुट है वही मेरे पति हैं अर्थात कृष्ण ही मेरे पति है। (ii) अपने परिवार की गरिमा का त्याग कर दिया है, अथवा परिवार और समाज का त्याग कर दिया अर्थात मैंने मर्यादा का उलंधन किया है। (iii) मीराबाई उपरोक्त पंक्तियों में समाज को चुनौती देते हुए कहती हैं कि उन्हें अब परिवार और समाज की कोई परवाह नहीं है। कृष्ण को पाने के लिए उसने परिवार की मर्यादा तक छोड़ दी है। वह संतों के पास बैठकर ज्ञान प्राप्त करती है और इस प्रकार लोक-लज्जा खो देती है। अथवा	**20**

Question	Answer	Marks
1	मैंने परिवार और समाज का त्याग कर दिया है / लोगों का कहना है कि मैंने मर्यादा का उलंधन किया है / मैंने संतों के बीच बैठकर लोक-लाज खो दिया है देना / किसी की परवाह नहीं की है। Modern Poetry (a) (i) इसका अर्थ है व्यापारिक प्रकृति अर्थात व्यापार में लाभ -हानि या फायदा- नुकसान देखना। (ii) मनुष्य के कार्य का नहीं, बल्कि उस कार्य के परिणाम का मूल्यांकन किया जाता है। जहाँ पर मनुष्य को लाभ दिखाई देता है, उसी से लोग प्रेम करते है। (iii) इन पंक्तियों के माध्यम से कवि उर्मिला के निस्वार्थ प्रेम के बारे में बताते हुए कहते हैं कि कुछ लोग अपना सम्बन्ध उसी व्यक्ति से रखना चाहते हैं जहाँ उनका स्वार्थ सिद्ध होता है। गुप्त जी बनियों के उदाहरण से कहना चाहते हैं कि प्रेम निःस्वार्थ होना चाहिए और प्रेम में व्यवसायिकता नहीं होनी चाहिए, लाभ-हानि नहीं देखना चाहिए तथा प्रेम में लेन-देन नहीं होना चाहिए। Modern Poetry (b) (i) इस जीवन में कभी-कभी हमारा अस्थिर मन अनेक सांसारिक चीजों में भटक जाता है। इस जीवन के सुंदर रास्ते पर जब चंचल मन संसारिक मोह में पड़ जाता है अर्थात मन भटक जाता है। (ii) दीनानाथ का अर्थ है गरीबों का स्वामी या भगवान। (iii) इन पंक्तियों में श्री मधुकर जी भगवान से प्रार्थना करते हैं कि जब मन भटकता हो तो मेरा मार्गदर्शन करें, जब मेरा समय कठिन हो तो मेरा मार्गदर्शन करें अर्थात् मन के भटकने पर दीनानाथ से मार्गदर्शन (सही रास्ता दिखाने) करने की प्रार्थना की है।	**20**

Question	Answer	Marks
For questions 2 to 13, award a mark out of 4 for Language, a mark out of 8 for Content and a mark out of 8 for Structure, using the band descriptors below this table. The answers in the rows below are examples of content points that examiners may expect to see in the candidates' answers. The references to the band descriptors refer to the **content** marks in Table 2.		
2	कबीर जी का मानना है कि इस संसार के कण-कण में ईश्वर का वास है अर्थात ईश्वर कण-कण में व्याप्त है। ईश्वर किसी स्थान विशेष पर निर्भर नहीं होता है। वह सबके हृदय में निवास करते हैं उनको पहचानने की जरूरत है। लोग धूमधाम से तीर्थयात्रा पर जाते हैं और दूर- दूर जाकर अन्य स्थानों में भगवान को ढूँढते हैं, लेकिन वह घर आए भिखारियों और प्रभावशाली लोगों में भी मौजूद होते हैं। यह साधक पर निर्भर है कि वह ईश्वर को कहाँ ढूँढता है। ऊपरी बैंड के विद्यार्थी इस तथ्य पर ज़ोर देते हुए एक सुसंगत उत्तर प्रस्तुत करेंगे कि कबीर जी मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते थे, उन्होंने हर जगह भगवान को देखा, उन्होंने मूर्ति पूजा, माला और भजन-कीर्तन को अस्वीकार कर दिया। ऐसे व्यक्ति के लिए कबीरजी का मानना है कि इस हाथ की माला को फेरने की बजाय मन के मोतियों को बदलो या घुमाओ। मध्य बैंड के विद्यार्थी अंश में दी गई बुद्धिमान बातों को लिखेंगे, निचले बैंड के विद्यार्थी एक सामान्य, केंद्रित उत्तर प्रस्तुत करेंगे।	**20**
3	मीराबाई को श्री कृष्ण की भक्ति के अलावा कुछ भी नहीं सूझता था, वह दिन-रात कृष्ण की भक्ति में लीन रहती थीं और सारा संसार ही कृष्णमय समझती थीं, इसलिए वह सांसारिक सुखों और मोह-माया से दूर रहती थीं, उनका मन केवल श्री कृष्ण पर ही लगा था। उन्होंने श्री कृष्ण को अपना पति मानकर अपने पद में श्री कृष्ण के सौन्दर्य का उत्तम वर्णन किया है। उदाहरणार्थ 'मेरे तो गिरधर गोपाल दुसरो न कोई' अर्थात उनकी कविता अपने प्रेमी से अलग हुई एक महिला की पीड़ा को दर्शाया है। वह स्वयं को पूरी तरह से भगवान कृष्ण को समर्पित कर देती है। ऊपरी बैंड के विद्यार्थी मीराबाई की कविता की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालेंगे और विभिन्न बोलियों का मिश्रण होने के बावजूद उनकी भाषा की शक्ति और इसकी संगीतमयता पर भी टिप्पणी कर सकते है। मध्य बैंड के विद्यार्थी थोड़ी विशेषताओं के बारे में बता सकते है। निचले बैंड के विद्यार्थी सामान्य विवरण देंगे और विश्लेषण कर सकते हैं।	**20**

Question	Answer	Marks
4	यह कविता यशोधरा नामक एक बड़ी काव्य-रचना का एक अंश है। इस में यशोधरा के पीड़ा का वर्णन किया गया है, जो गौतम बुद्ध की पत्नी हैं, जिन्हें वह घर पर छोड़ गए हैं। गौतम बुद्ध ने ज्ञान और बुद्धि की प्राप्ति के लिए एक रात अपनी पत्नी, परिवार और राज्य को छोड़ दिया। पत्नी अब उसके लिए तरस रही है और पूछ रही है, कि 'सखि, वे मुझ से कहकर जाते कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते?' उन्होंने मुझे क्यों नहीं बताया कि वह हमें हमेशा के लिए छोड़ रहे हैं? यदि उन्होंने मुझे बताया होता कि वह ऐसे महान कार्य की तलाश में जा रहे है, तो मैंने उनका समर्थन किया होता और उनको एक महान और बहादुर राजकुमार के योग्य शानदार विदाई दी होती। लेकिन मैं अब तीव्र विरह की इस भावना से पीड़ित हूँ। ऊपरी बैंड के विद्यार्थी इन सभी बिंदुओं को प्रस्तुत कर सकते है और प्रासंगिक उदाहरणों के साथ यशोधरा के पीड़ा का वर्णन करेंगे। मध्य बैंड के विद्यार्थी आंशिक उत्तर दे सकते है। निचले बैड के विद्यार्थी बिना विश्लेषण के कविता का अर्थ बता सकते हैं।	20
5	ब्रजेंद्र भगत 'मधुकर' ने मानव आत्मा के गुणों, उसकी अंतर्निहित महानता तथा प्रगति और आगे बढ़ने की क्षमता की प्रशंसा की है। मानव जाति की इन महान विशेषताओं के लिए हमें सदैव उनका सम्मान करना चाहिए। अपेक्षित उदाहरण :- कवि अपनी कविताओं में मानव-मन की महानता बताते हुए कहते हैं कि यह पहाड़ जितना ऊँचा और समुद्र जितना गहरा है। यह फूल की नई पंखुड़ियों के समान कोमल और मधुमक्खियों के रस के समान सुगंधित और स्वादिष्ट है। मानव आत्मा आकाश में सूर्य की तरह चमकती है और यह पूर्णिमा की रात (चांदनी) की तरह ठंडी होती है। मानव आत्मा तारों से भरे आकाश की तरह है और निर्माता की रचना की तरह विशाल है। लोगों का मानना हैं कि वेद, कुरान, ग्रंथ और प्राचीन साहित्य सभी धर्मों का सार मानव आत्मा में रहता है, इसमें सभी ज्ञान के साथ-साथ संतों और बुद्धिमान पुरुषों का ज्ञान भी शामिल है। ऊपरी बैंड के विद्यार्थी इनमें से अधिकांश उदाहरणों को प्रस्तुत करेंगे और उपरोक्त मानवता की महान विशेषताओं के बारे में लिखेंगे। मध्य बैंड के विद्यार्थी इनमें से कुछ उदाहरणों को समझाने में सक्षम होंगे। निचले बैंड के विद्यार्थी द्वारा समझाने के बजाय कहानी लिख सकते हैं।	20

Question	Answer	Marks
6	त्यागपत्र जैनेन्द्र जी का एक सफल उपन्यास है। उपन्यास की शुरुआत से ही प्रमोद की डायरी के आधार पर जेनेंद्र जी प्रमोद के मन की विवशता को प्रस्तुत करते हैं । इस उपन्यास में प्रमोद एक बहुत ही महत्वपूर्ण पात्र है और उसे अतीत की यादें सताती रहती हैं। इस कारण उन्हें पश्चाताप हो रहा है और उन्होंने जज जैसे महत्वपूर्ण पद को त्याग दिया है। "त्यागपत्र" उपन्यास में प्रमोद की आत्मग्लानि को दर्शाया गया है। इस अनुभव के परिणामस्वरूप, मुख्य न्यायाधीश, अपने विवेक से अपने उस पद पर बने नहीं रह सके जिसके अंतर्गत वह समस्त मानव जाति को न्याय प्रदान करते थे। इसलिए उन्होंने अपनी अंतरात्मा को बचाने के लिए मुख्य न्यायाधीश के पद से त्यागपत्र दे दिया और इस प्रकार यह उपन्यास के नाम को पूरी तरह सार्थक करता हुआ आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। ऊपरी बैंड के विद्यार्थी उदाहरणों के साथ त्यागपत्र के पीछे का कारण बता सकते है और उपन्यासकार द्वारा उठाए गए कुछ सामाजिक मुद्दों का भी समावेश कर सकते है। मध्य बैंड के विद्यार्थी कहानी सुनाएँगे लेकिन हो सकता है कि वे त्यागपत्र के अन्य पहलुओं पर ध्यान केंद्रित न करें। निचले बैंड के विद्यार्थी कहानी पर कुछ प्रासंगिक टिप्पणियाँ दें सकते हैं।	**20**

Question	Answer	Marks
7	‘त्यागपत्र' जैनेंद्र कुमार द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध उपन्यास है। इसमें मृणाल नामक पात्र के माध्यम से नारी की यातनापूर्ण स्थिति को पूरी मार्मिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। समाज किस-किस तरह की रुढ़िवादी परंपराओं और अनैतिकताओं का शिकार था, इस उपन्यास में लेखक ने उन सब का सटीक वर्णन किया है। उपन्यास में एम. दयाल के चरित्र को प्रमोद के नाम से दर्शाया गया है। पूरा उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। इस उपन्यास में महिलाओं की स्थिति को बहुत ही मार्मिक ढंग से उजागर किया है। उस समय लड़कियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी, पर्दा प्रथा थी और परिवार का लक्ष्य महिलाओं को आदर्श बनाना था। मृणाल की भाभी भी उसे कड़े अनुशासन में रखकर एक आदर्श महिला बनाना चाहती थी। मृणाल को आज़ादी नहीं थी, उसने एक अधेड़ उम्र के आदमी से शादी की थी। पति द्वारा त्याग दिया जाना, एक कोयला बेचने वाले से प्यार करना और बाद में धोखा खाना और अंत में एक बदनाम बस्ती में बस जाना, यह सब महिलाओं को सामाजिक बंधनों में बांधने का ही कारण था। उपन्यासकार ने भारतीय नारी की पराधीनता, बेमेल विवाह की पीड़ा, सामाजिक प्रताड़ना, आर्थिक पराधीनता से उत्पन्न नारी जीवन की मजबूरियों को अत्यंत मार्मिक एवं यथार्थवादी अभिव्यक्ति दी है। प्रमोद उसे उसकी दयनीय परिस्थितियों से बचाने में झिझकता है क्योंकि वह समाज में एक उच्च स्थान पर है, लेकिन जब वह मर जाती है, तो उसे अनुभव होता है कि उसने एक महिला के ख़िलाफ़ कितना भयावह अपराध किया है, जो महिलाओं के प्रति समाज के व्यवहार का शिकार थी। ऊपरी बैंड के विद्यार्थी महिलाओं की स्थिति का विस्तार से वर्णन कर सकते , वे सामाजिक रूढ़िवादिता का प्रतिनिधित्व करेंगे और बताएँगे कि जब उसके पति द्वारा उसे छोड़ दिया जाता है तो वह कहती है, “मैंने अपने पति को नहीं छोड़ा है। उसने मुझे छोड़ दिया है।” मैं केवल नारीवाद में विश्वास करती हूँ। इन सामाजिक मान्यताओं और रूढ़िवादी मानसिकता के कारण कठिन परिस्थितियों में भी अपने मायके में नहीं रह सकती क्योंकि यह समाज की नजर में ठीक नहीं होगा। मध्य बैंड के विद्यार्थी उपन्यास में महिलाओं की समस्याओं के अधिकांश पहलूओं का वर्णन कर सकते है। निचले बैंड के विद्यार्थी केवल कहानी बता सकते हैं।	**20**

© Cambridge University Press & Assessment 2025

Question	Answer	Marks
8	प्रतिज्ञा एक युवा आदर्शवाद की कहानी है जो सामाजिक उत्थान और प्रगति के कार्य का दायित्व अपने ऊपर लेता है। यह उस युग के समाज का एक सजीव वर्णन करता है और उन बाधाओं को प्रस्तुत करता है जिनका सामना कुछ लोगों को करना पड़ा जो उस समय प्रचलित सामाजिक बुराईयों को दूर करके एक नए और बेहतर देश बनाने में विश्वास करते थे। वे विधवाओं के लिए आश्रम बनाने के लिए संपूर्ण प्रतिनिधित्व करते हैं। इस कहानी में मुंशीजी ने मित्रता, पति-पत्नी तथा पारिवारिक रिश्तों के साथ-साथ सभी प्रतिज्ञाओं के बीच मानवता की प्रकृति और मानवीय इरादों के अर्थ को भी व्यक्त किया है। प्रेमचंद के उपन्यास 'प्रतिज्ञा' में लाला बद्रीप्रसाद और देवकी, पंडित बसंतकुमार और पूर्णा, विधुर अमृतराय और दाननाथ के परिवारों की कहानी है। प्रेमचंद ने समाज में विधवा महिलाओं की समस्याओं को उठाया है। लाला बद्रीप्रसाद की एक पुत्री प्रेमा, एक पुत्र कमलाप्रसाद और पुत्रवधू सुमित्रा हैं। अमृतराय और दाननाथ गहरे मित्र हैं। अमरनाथ का भाषण सुनने के बाद, अमृतराय प्रतिज्ञा करता है कि वह प्रेमा से शादी नहीं करेगा और एक विधवा से शादी करेगा और वह असहाय विधवाओं की मदद करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है। प्रेमा के पिता ने उसकी शादी दाननाथ से कर दी, हालाँकि प्रेमा और अमृतराय अपने दिलों में एक-दूसरे के लिए जगह बनाए रखते हैं। प्रेमा एक पत्नी के रूप में अपने कर्तव्य के पथ से नहीं हटती और पति धर्म का पालन करती है। बसंतकुमार की गंगा में डूबने से मृत्यु हो जाने पर उसकी पत्नी पूर्णा प्रेमा के पिता लाला बद्रीप्रसाद के पास आकर रहने लगती है, परंतु कंजूस, शरारती तथा विलासी कमलाप्रसाद अपनी पत्नी सुमित्रा के प्रति उदासीन होकर अब पूर्णा को अपने प्रेम जाल में फंसाने का प्रयास कर रहा है साथ ही अमृतराय की महिला सहायता संबंधी योजनाओं का भी विरोध करता है । प्रेमा के प्रेम को परखने के लिए दाननाथ भी अपने मित्र का विरोध करता है। यद्यपि प्रेमा अपने पतिव्रत में कोई अन्तर नहीं आने देती, परन्तु उसकी सहानुभूति भी अमृतराय की पूरी सहायता करती है। दूसरी ओर, एक दिन कमलाप्रसाद पूर्णा को अपने बगीचे में ले जाकर उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश करता है और उससे घायल हो जाता है। पूर्णा अमृतराय के आश्रम में जाती है। कमलाप्रसाद सुधर जाता है और अपना दुर्व्यवहार छोड़ देता है और सुमित्रा के साथ खुशी से रहने लगता है। अमृतराय ने आश्रम के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी। ऊपरी बैंड के विद्यार्थी उपन्यास की कहानी के साथ सामाजिक उत्थान और प्रगति का वर्णन कर सकते हैं। मध्य बैंड के विद्यार्थी उपन्यास की कहानी के अधिकांश पहलुओं को प्रस्तुत कर सकते हैं और कुछ सामाजिक मुद्दों का उल्लेख करेंगे। निचले बैंड के विद्यार्थी संक्षेप में कहानी बता सकते हैं।	20

Question	Answer	Marks
9	इस उपन्यास का नायक अमृतराय है। वह एक युवा विधुर है और उसने एक युवा विधवा महिला से शादी करने का प्रण लिया है, जो गरीबी, बेईमान पुरुषों द्वारा शोषित और सामाजिक समस्याओं द्वारा पीड़ित है। अमृतराय के विचार में युवा विधवाओं की समस्या को हल करने का यह एक अच्छा तरीका है क्योंकि निश्चित रूप से कोई भी एक विधवा से विवाह नहीं करना चाहता। पूर्णा अच्छे चरित्र और स्वभाव की एक नवविधवा युवती है। हालाँकि, कमलाप्रसाद जैसे व्यभिचारी लोग भी हैं, जो शादीशुदा होते हुए भी उनकी नज़र पूर्णा पर है और जो उसे एक बगीचे में बुलाकर उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश करता है। दूसरी ओर, नायक अमृतराय ने अपनी संपत्ति का उपयोग विधवाओं के लिए एक केंद्र स्थापित करने के लिए किया है, जहाँ वे सुरक्षित रह सकें और उन्हें शिक्षा दी जा सके। प्रेमचंद ने समाज में विधवाओं के साथ होने वाले दुर्व्यवहार का वर्णन किया है। इसे दो तरीकों से संबोधित किया जा सकता है, सबसे पहला योग्य, ईमानदार और सभ्य पुरुषों द्वारा विधवाओं से विवाह करने के लिए आगे आना का संकल्प लेना या प्रतिज्ञा लेना (जो उपन्यास का नाम है), दूसरा विधवाओं के लिए सुरक्षित घर स्थापित करना जहाँ उन्हें शिक्षा भी मिल सके। ऊपरी बैंड के विद्यार्थी मुख्य मुद्दों की रूपरेखा तैयार करेंगे और नायक इस सामाजिक अभिशाप को कैसे हल करना चाहता है, ये बताएँगे। मध्य बैंड के विद्यार्थी कथा का सटीक वर्णन करेंगे और उन कुछ समस्याओं का उल्लेख करेंगे जिनका सामना हमारी नवविवाहित पात्रा पूर्णा ने किया है। निचले बैंड के विद्यार्थी उन अंतर्निहित मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किए बिना कहानी का वर्णन कर सकते हैं।	**20**

Question	Answer	Marks
10	कफ़न पारंपरिक समाज की एक सशक्त कहानी है। कफ़न कहानी में कुल ३ सदस्य है। घीसू, उनका बेटा माधव और बहू बुधिया। इस कहानी का मुख्य पात्र घीसू है जो इस परिवार का मुखिया है। गरीब मृत महिला का पति माधव उसके अंतिम संस्कार के लिए पैसे इकट्ठा करता है, लेकिन जैसे ही रात होती है घीसू और उसका बेटा माधव अपने दुखों को दूर करने के लिए एक मदिरालय में चले जाते हैं और इस तरह कफ़न सहित दाह संस्कार के लिए एकत्र किए गए सभी पैसे मदिरा में उड़ा देते हैं। घीसू और माधव का चरित्र चित्रण और उसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं: 1. घीसू और माधव दोनो बहुत ही निकम्मे और आलसी हैं। वे दलित हैं और अपनी अयोग्यता के कारण पूरे गाँव में बदनाम है। कहानी के अनुसार घीसू एक दिन काम करता था और तीन दिन आराम करता था। 2. घीसू और माधव झूठ बोलने में और बहाने बनाने में बहुत माहिर थे। जब बुधिया मर जाती है तो उनका असली रूप (झूठ) सामने आ जाता है, वे कफ़न के पैसे से मदिरा पीते हैं और जमकर खाते हैं। जब माधव ने पूछा- ‘लोग न पूछेंगे, कफ़न कहाँ है?’तब घीसू हँसा और बोला 'तो क्या कहोगे कि रुपये कमर से फिसल गये, बहुत ढूँढ़े, पर न मिले? 3. दोनों इतने बेशर्म हैं कि उन्हें किसी की परवाह तक नहीं है। दया नाम की चीज़ तो उन्हें छू भी नहीं गई थी। फलस्वरूप उन पर कठोरता एवं निर्ममता हावी हो गई । जब माधव की पत्नी बुधिया प्रसव पीड़ा से पीड़ित थी, तब उन दोनों को कोई चिंता ही नहीं थी। ऊपरी बैंड के विद्यार्थी उदाहरण के साथ घीसू और माधव के चरित्र को समझाएँगे। मध्य बैंड के विद्यार्थी इस विषय पर कुछ प्रासंगिक बिंदु लिखने में सक्षम होंगे। निचले बैंड के विद्यार्थी सिर्फ़ कहानी बताने में सक्षम होंगे।	**20**

Question	Answer	Marks
11	‘सच का सौदा’ कहानी सुदर्शन जी ने लिखी है। यह कहानी एक आम आदमी के सपनों और सच्चाई का समर्थन करती है। जैसा कि हम भी जानते हैं, सत्य का समर्थन करना कठिन है। यह कहानी भले ही पुरानी है, लेकिन हर काल और युग के लिए सत्य है और सदैव प्रेरणादायक रहेगी। उन्होंने अपनी कहानियों में समस्याओं का आदर्शवादी समाधान प्रस्तुत किया है। कहानी की भाषा सरल, स्वाभाविक, प्रभावशाली और मुहावरेदार है। सुदर्शन जी को गद्य और पद्य दोनों में विशेषज्ञता प्राप्त थी। इसलिए उनकी यह कहानी भी बेहद आदर्शवादी और प्रेरणादायक है। सुदर्शन जी ने पाठकों को समझाया है कि हमारे जीवन में स्थिति कितनी भी खराब क्यों न हो, हमें अपना विश्वास और ईमानदारी नहीं छोड़नी चाहिए। जैसा कि कहानी में कहा गया है कि सुदर्शन जी ने स्वाभिमान से जीने, परिस्थितियों के सामने डटे रहने और सिद्धांतों से समझौता नहीं करने की बात की है, इनका मानना है कि सत्य की हमेशा जीत होती है। ‘सच का सौदा’ कहानी सच्चाई और ईमानदारी के स्थायी मूल्य के महत्व को दर्शाती है। ऊपरी बैंड के विद्यार्थी कहानी लिखेंगे और सत्य का मूल्य समझाएँगे। मध्य बैंड के विद्यार्थी अतर्निहित मुख्य संदेशों के बजाय कहानी पर अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे। निचले बैंड विद्यार्थी मुख्य रूप से कहानी सुनाएंगे, जिसमें सच्चाई का दृष्टिकोण कम होगा।	**20**
12	‘शरणागत’ कहानी वृन्दावनलाल वर्मा द्वारा लिखित एक सामाजिक कहानी है। ‘शरणागत’ का अर्थ है ‘शरणार्थी’। इसका कथानक हमारे समाज की खोखली मान्यताओं की समीक्षा करते हुए उच्च जीवन-मूल्यों की स्थापना करता है। किसी भी सामाजिक व्यक्ति को कर्म और वंश आदि के नाम पर छुआछूत या ऊँच-नीच का शिकार होते हुए दर्शाया गया है। सबसे बड़ा धर्म मानव-धर्म है जो हमें दया, स्नेह और त्याग सिखाता है। कथाकार ने समाज की तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति का उल्लेख करते हुए उच्च जाति के महत्व को स्वीकार किया है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जो शरण में आए उसका उद्धार करना चाहिए, यही बात यहाँ प्रस्तुत की गई है। ऊपरी बैंड के विधार्थी कहानी के आधार पर समझाएँगे कि लोगों को धार्मिक सीमाओं से परे मानवता के सार को महत्व देना चाहिए, मध्य बैंड के विधार्थी आंशिक रूप से प्रासंगिक स्पष्टीकरण दें सकते है। निचले बैंड के विधार्थी कहानी सुनाने का प्रयास कर सकते है।	**20**

Question	Answer	Marks
13	"खुदाराम" एक आस्था का पालन करनेवाले लोगों की कहानी है। इस कहानी के माध्यम से हमें बताया गया है कि आस्था का पालन करते हुए उनसे होनेवाले ख़तरों और उन्हें कैसे हल किया जाए इसे प्रभावशाली रूप से दर्शाया गया है। एक दिन पति से प्रताड़ित एक मुस्लिम औरत ने हिंदू परिवार में स्वयं को हिंदू बताकर शरण ली। वो औरत बहुत मेहनती थी और परिवार के सदस्यों के साथ अच्छे से घुल-मिल गई थी और अचानक उसका पति उसको ढूँढता हुआ आता है तब पता चलता है कि वो औरत असल में मुसलमान है जो अपने आप को हिंदू बताकर हिंदू परिवार के साथ रह रही है। और इसी कारण से पूरे परिवार को हिंदू समाज से बहिस्कृत कर दिया जाता है और उस परिवार को मुस्लिम धर्म स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जाता है, जिसका वो पालन नहीं कर पाते है। उसी समय खुदाराम का प्रवेश होता है जो समाज उद्धारक के रूप में कार्य करता है और लोगों को बताता है कि व्यक्ति समुदाय से बड़ा होता है। हर किसी को शांति से रहने का अधिकार है। यह कहानी रूढ़िवादी मान्यताओं और समाज में उत्पन्न होने वाले असंख्य संघर्षों की कहानी है। ऊपरी बैंड के विधार्थी कहानी के बारे में बताएँगे और लोगों को धार्मिक रेखाओं से परे मानवता के महत्व को समझाएँगे। मध्य बैंड के विधार्थी आंशिक रूप से प्रासंगिक स्पष्टीकरण करेंगे। निचले बैंड के विधार्थी कहानी का सारांश लिख सकते हैं।	**20**

QUESTION 1 – GENERAL MARKING CRITERIA Answers will be marked according to the following general criteria. Please tick each page of the script marked. Comments can also be added. Write your mark for each question at the end of that question.		
Band	**Mark**	
1	9–10	Detailed, well-written, well-organised answer which is completely relevant to the question. Referencing of question is correct, text, words or phrases are well explained. Excellent spelling and grammar. Sensitive response to the text.
2	7–8	Coherent and well-organised answer. Referencing of question is correct, text, words or phrases are explained well although there may be a few omissions/superficialities. Good spelling and grammar although there may be a few minor mistakes.
3	5–6	Competent answer, relevant but limited; signs of personal response. Some attention to words, phrases or text but some significant omissions and/or misunderstandings. Use of language is generally good but with some limitations or mistakes.
4	3–4	Answer relevant to question but may show some misunderstanding and/or limitations; effort to communicate personal response and knowledge. Mistakes made with spelling and grammar but the meaning is usually clear.
5	1–2	Attempt to answer question and some knowledge of text; limited answer; clumsy expression. Mistakes made with spelling and grammar which sometimes impede meaning.
6	0	No attempt to respond to the question.

TABLE 1 USE OF LANGUAGE Use this for Questions 2–13		
Band	**Mark**	
1	**4**	**Excellent use of language with a range of grammar correctly used, style appropriate to the context, and correct spelling.**
2	**3**	**A good range of language appropriate to the question, a range of grammar used. Occasional minor errors do not impede communication.**
3	**2**	**Sufficient language used which is appropriate to the question. Limited range of grammar used. Grammar and spelling are generally correct although there are some errors, the meaning is usually clear, but occasionally meaning is impeded.**
4	**1**	**Use of language is not always adequate or appropriate for the question. Errors in grammar and spelling often impede meaning.**
5	**0**	**No meaningful language used.**

TABLE 2 CONTENT Use this for Questions 2–13		
Band	**Mark**	
1	**7–8**	**An interesting and sensitive response to the question which shows a thorough understanding of the text. The answer is comprehensive and includes many well-made and valid points. Answer goes beyond a simple narrative.**
2	**5–6**	**A good response which makes many valid points, although there may be some small inaccuracies or irrelevant material included.**
3	**3–4**	**A few valid points made in answer to the question, but there is also quite a lot of inaccurate and/or irrelevant material.**
4	**1–2**	**Some attempt has been made to respond to the question, but much of the response is unclear, inaccurate or irrelevant.**
5	**0**	**No relevant content included in answer.**

© Cambridge University Press & Assessment 2025

TABLE 3 STRUCTURE Use this for Questions 2–13		
Band	**Mark**	
1	**7–8**	**Excellent structure. The candidate presents a logical and well-argued analysis which covers the whole question and all its components.**
2	**5–6**	**A good structure which can be clearly understood. All the main points of the question are addressed in the answer.**
3	**3–4**	**The main points of the question are addressed, but the structure and cohesion of the answer are sometimes unclear. There may be some instances of narrative rather than analysis of the text.**
4	**1–2**	**An attempt has been made to answer the question but there is little analysis, the answer may consist of narrative. The structure may be unclear and hard to follow.**
5	**0**	**No attempt has been made to answer the question.**

© Cambridge University Press & Assessment 2025